काव्य सृजन परिवार

Also available on: amazon.in flipkart

9 788194 857433
₹=250/-

Subhanjali Prakashan
28/11, Ajitganj Colony, T. P. Nagar, Kanpur-208023. Mob.:08707872316
subhanjaliprakashan@gmail.com

काव्यामृतं राज का.....

डॉ. राकेश दीक्षित 'राज'

'काव्य सृजन परिवार' द्वारा संकलित...

राज का.....

काव्यामृतं

वसुधारूपी कागज पर हल जैसी कलम चलाता हूँ।
शब्द-बीज भावों के बोकर लय की खाद लगाता हूँ।
सिंचित करके नेह नीर से नित नव गीत उगाता हूँ।
छंदबद्ध साहित्य सृजन का मैं हलधर कहलाता हूँ।।

'राज'

संपादक

डॉ. राकेश दीक्षित 'राज'

Scanned by CamScanner

काव्यामृतं

संपादक

डॉ. राकेश दीक्षित 'राज'

Subhanjali Prakashan

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-948574-3-3

© डॉ. राकेश दीक्षित 'राज' (सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक :

सुभाञ्जलि प्रकाशन
28/11, अजीतगंज कॉलोनी,
टी. पी. नगर, कानपुर-208023
मोबाइल : +91 8707872316
subhanjaliprakashan@gmail.com

संस्करण :

प्रथम - 2020

मूल्य :

पेपर बैक : ₹ 250/- (दो सौ पचास मात्र)
हार्ड बाउण्ड : ₹ 350/- (तीन सौ पचास मात्र)

आवरण :

डॉ. राकेश दीक्षित 'राज' (चित्र : गूगल से साभार)

शब्द-सज्जा :

विद्या ग्राफिक्स, कानपुर

Kavyamritam

Edited by : Dr. Rakesh Dixit 'Raj'

Scanned by CamScanner

16. कहने को आराम बहुत है 134
17. अनुभूति के आंगन से 135

• **हिना शाह 'मेहंदी'** **137-148**

1. गजल (माँ) 138
2. करे तू हम सब की परवाह 139
3. चुरा चुराकर माखन खाकर 140
4. घर को सजाने के लिए 141
5. नाम राधा और मीरा था 142
6. कहे जब लोग उसने खुदकुशी कर दी 143
7. सुख और शांति में फर्क बहुत 144
8. सबको अपना हक दिखता है 145
9. दिखावे का है सब व्यवहार 146
10. रुत सुहानी देखकर हालात बेचारे हुए 147
11. दासताँ दिल की सुनाकर रो दिए 148

• **डॉ. भावना नानजीभाई सावलिया** **149-168**

1. हे प्रभु! कृपा निधान, चले तेरा विधान 150
2. गुरु वंदना 151
3. मंगल भोर 152
4. हिन्दी मेरी शान है 153
5. मन का मीत 154
6. सजना (संयोग शृंगार) 155
7. जन जन के श्रीराम 156
8. बाल मजदूर की व्यथा 157

Scanned by CamScanner

9.	जीवन रीत	158
10.	विफलता भी गुरु हमारी	159
11.	खुशियाँ	160
12.	मेरे मन मीत	161
13.	सत्य पंथ	162
14.	प्रेम पाती	163
15.	अनमोल जीवन	164
16.	जीवन का सार	165
17.	सीता	166
18.	मैत्री	167
19.	मांडवी का त्याग	168

Scanned by CamScanner

डॉ. भावना नानजीभाई सावलिया

जन्म : 03 अप्रैल, 1973

माता : वनिता बहन नानजीभाई सावलिया

पिता : नानजीभाई टपुभाई सावलिया

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल. पीएचडी. जीसेट

संप्रति : अध्यापन कार्य, आर्ट्स कॉलेज मोडासा, अरवल्ली

प्रकाशन : अब तक 4 पुस्तकें प्रकाशित
राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में 35 से अधिक
शोध पत्र प्रकाशित, अनेक साझा संग्रहों में भी प्रकाशन

अवार्ड : इंटरनेशनल अवार्ड-06, नेशनल अवार्ड-05

सम्मान : अनेक संस्थाओं द्वारा 125 से अधिक सम्मान प्राप्त

संपर्क : हरमडिया, वाया ता. गोंडल, जिला-राजकोट,
सौराष्ट्र (गुजरात)

मोबाइल : +91 8849842456

ई-मेल : savaliabhavna501@gmail.com

Scanned by CamScanner

अहीर छंद

हे प्रभु! कृपा निधान, चले तेरा विधान।
आया शरण दयालु, विनती सुनो कृपालु।

मंगल करो विचार, भागे मन का विकार,
हो प्रेम का निनाद, जीवन में न विषाद।

हो मोह से विराग, मन का जले चिराग।
जग में दिखे प्रकाश, हो ज्ञान का उजास।

मेघ अंबर विलोक, बरसे खुशी त्रिलोक।
हो मनुज का विकास, कष्ट का हो निकास।

जो सदा मुस्कुराय, प्रेम से सब बुलाय।
होते न वो हताश, मानो दिखे पलाश।

हे परम प्रभो कृपालु, दीनबन्धु हे दयालु।
मेरी सुनो पुकार, मन से हरो विकार।

राधेश्यामी छंद

गुरु वंदना

गुरु के चरणों में कर वंदन
आशीष सदा मैं प्राप्त करूँ।
गुरु महिमा अपरंपार सुनी,
रज चरणों की नित शीश धरूँ।

शीतल छाया वट वृक्षों-सी,
गुरु जीवन से संताप हरे।
मम अंधकारमय जीवन में,
ज्योतिर्मय ज्ञान-प्रकाश भरे।

अनुपम भण्डार ज्ञान का गुरु,
पामर अज्ञानी शिष्य सभी,
शृंगार हमारा करते गुरु,
हिय बहती निर्मल धार तभी।

गुरु पारसमणि है शिष्य-लोह,
छूकर उनको सब स्वर्ण बने।
गुरु हीरा शिष्य कुरूप शिला,
घिस-घिस कर देते रूप घने।

Scanned by CamScanner

दोधक छंद

मंगल भोर

मंगल भोर दिखावत न्यारी।
शंकुत गीत सुनावत प्यारी।
केसरिया वसना सुप्रभाती।
ज्योति अखंड जहाँ मन भाती।

नूतन चेतन आस जगाती।
सुन्दर सोच हिया महकाती।
प्रेम सुधा रस नित्य पिलाता।
जीवन आँगन जो महकाता।

अंबर में खग पंख पसारे।
बाग खिले मकरंद निहारे।
स्वर्णिम वस्त्र समंदर भाया।
पादप झूलत शीतल छाया।

बिंदु तुषार दिखे मणि मोती।
लगता ज्यों विरही जल रोती।
प्रीतम क्यों मन में मुसकाया।
भीतर प्रेम प्रिया चहकाया।

दोहा छंद

हिन्दी मेरी शान है

हिन्दी मेरी शान है, भारत की पहचान।
संविधान की प्राण है, अरु जन-जन की जान।।

देवनागरी-लिपि जहाँ, जग में हुई प्रसिद्ध।
उच्चारण के स्थान से हुई विश्व-प्रसिद्ध।।

हिन्दी का सम्मान हो, बढ़े देश की शान।
भाव भरो अपनत्व का, रहे देश की आन।

है हिन्दी में मधुरता, हरे मनुज का ताप।
पुलकित तन-मन को करें, खुश हो अपने आप।।

सीमा का संदेश है, भ्रातृभाव सरसाव।
जोड़े देश-विदेश को, हिन्दी का मधु-भाव।।

है जन-मन की वेदना, कवि की करुण पुकार।
शब्द-भाव की साधना, नव-रस की मधु-धार।।

हिन्दी में सब काज हो, वहाँ तिरंगा शान।
हिन्दी की गरिमा जहाँ, मिले देश को मान।।

मेरे भारत देश में, हो हिन्दी परिधान।
गौरव हो हर हाल में, हो न कभी व्यवधान।।

Scanned by CamScanner

महा शृंगार छंद

मन का मीत

सांवरे मेरे मन के मीत,
जगाई मेरे दिल में प्रीत।
प्रेम के गाऊँ पल पल गीत।
लिया दिल तूने मेरा जीत।।

भाल का तू है मेरा चांद,
सताती हर पल तेरी याद।
कहाँ बैठे हो मेरे मीत।
मधुर मुझ से कर ले संवाद।।

बना पायल की तू झँकार,
काव्य हूँ मैं, तू अलंकार।
हृदय मम आतुर वीणा तार।
करो झँकृत मेरा संसार।

नैन से बरसे रिमझिम नेह,
सजनवा गाये सावन गीत।
भिगोये चूनर प्रिय का प्यार,
न सूखे कभी हमारी प्रीत।।

तोटक छंद

सजना (संयोग शृंगार)

पकड़ो अब दर्पण यूँ सजना।
जियरा बिलखे पियु से सजना।
गुँथ कुंतल में गजरा महके।
बिंदिया चमके हियरा गहके।

पियु अंजन से मधुता बरसे।
अरुणोष्ठ लिए मनवा सरसे।
मुसकान भरे दिल में खुशियाँ।
दिख के सजनी हँसती सखियाँ।

कँगना खनके घुँघरू झनके।
झनकार सुने मनके मनके।
उड़ती चुनरी, कटि जो लचके।
दृग-बाण चले रहना बचके।

मन-मंदिर में प्रिय प्रीत जले।
दृग में सपने मधु नेह पले।
भर के खुशियाँ हिय दामन में।
पनपे सपने उर-सावन में।

Scanned by CamScanner

वामा छंद

221 122 2 112

जन जन के श्रीराम

श्री राम बसे सबके मन में।
मधु फूल खिले उर्मिल वन में।
सुख भाव वहाँ प्रभु वास जहाँ।
आनंद मिले सब प्रेम जहाँ।

श्री राम अयोध्या आवत हैं
शुभ गीत वहाँ सब गावत हैं।
आनंद सदा बरसे मन में।
शुभ भाव पले जीवन-वन में।

शुभ-दीप जले निर्मल-उर में।
प्रभु गान बहे मंगल-सुर में।
पनपे न अमंगल भाव वहाँ।
पर दुख हरने की चाव जहाँ।

श्री राम हरें संकट जन का।
शुभ-दीप जले मानव मन का।
श्री राम सिया का वास वहाँ।
दिन-रात रहें प्रभु आस जहाँ।।

राधेश्यामी छंद

बाल मजदूर की व्यथा

मैं आया तेरे द्वार प्रभो
व्यथा मासूम फूल की सुनो।
बचपन मेरा किसने छीना,
मजबूर बाल की पीर सुनो।

उड़ना था मुझको भी नभ में
काटी किसने पाँखें मेरी?
रह गये अधूरे सब सपने
नम किसने की आँखें मेरी।

नंगे छोटे पैरों में मैं
काँटों की कैसे चुभन सहूँ?
दु:ख का है अन्तिम छोर यही
किसको मैं तेरे सिवा कहूँ?

घेरा है अब तम ने मुझको,
कर दो मम मार्ग प्रशस्त प्रभो।
हे करुणा सागर दीन बन्धु
कर दो मुझको आश्वस्त प्रभो

Scanned by CamScanner

महा शृंगार छंद

जीवन रीत

सुफल देता है मन का धैर्य,
बढ़े मीठी वाणी से प्रीत।
बड़े-छोटों का हो सम्मान,
निभाएँ सबसे जीवन रीत।

भाव को ऊँच-नीच के छोड़
हृदय में धरें एक-सा भाव,
जलाते रहें प्रेम का दीप,
करें जीवन के दूर अभाव।

हरें निर्धन के मन की पीर,
न होवे कभी हमें अभिमान।
निभाएँ सुख-दुख में हम साथ,
करें तम को दीपों का दान।

रहे बहता करुणा का नीर,
खिलें मन की बगिया में फूल।
सुनाई दें मानवता गीत,
मिटें अब उर के सारे शूल।

विधाता छंद

विफलता भी गुरु हमारी

सफलता से न करता मद, विफलता से न डिगता है
किया स्वीकार यह जिसने, उसे आनंद मिलता है।

प्रकृति का खेल जो जाना, उसे मिलता मधुर फल है।
कभी खोते नहीं वे नर, उन्हें अनमोल हर पल है।

सिखाती पाठ गुरु-सा है चुनौती हर विफलता की।
रखे संकल्प दृढ़ मन में, घड़ी हमको सफलता की।

वही अनुभव हमारा जो, बड़ी ही पाठशाला है।
उसी उत्कृष्ट शिक्षा से गले में जीत माला है।

करो सम्मान हर पल का, लगे प्यारी विफलता वो।
नहीं होता हमें दुख तब खुशी मानो सफलता वो।

रखे हम धैर्य तन-मन से, परिश्रम भाल पर दमके।
न क्यों चलते रहे अविरल, पसीने बूंद तन चमके।

Scanned by CamScanner

तोटक छंद

खुशियाँ

मन-आँगन में खुशियाँ महके।
तब जीवन में चिड़िया चहके।
चिड़िया करती मधु शोर जहाँ।
सबका मन गावत गीत वहाँ।।

शिशु का हँसना दुख दूर वहाँ।
सुख औषध-सा नित प्राप्त जहाँ।
जिसको मिलती खुशियाँ जग में।
उसको लगता उड़ता नभ में।।

पियु से खिलती कलियाँ मन की।
सजना भरते खुशियाँ जग की।
शिखि-नर्तन सा मनवा थिरके।
हियरा गरजे घुँघरू झनके।।

पियु अंजन से मधुता बरसे।
अरुणोष्ठक ले मनवा हरसे।
मुसकान भरे दिल में खुशियाँ।
दिखके सजनी हँसती सखियाँ।।

महा शृंगार छंद (शृंगार रस)

मेरे मन मीत

पास बैठो मेरे मन मीत,
करो तुम मेरा आज शृंगार।
सजे तारे सी बिंदिया भाल,
उजास का सिंदूरी उपहार।।

मधुर करती पायल झनकार।
चूड़ियाँ खनकें सुबहो-शाम
हृदय का मेरे तू है हार।
चुनर ओढ़ूँ मैं तेरे नाम।।

कि तू है मेरा प्राणाधार,
और सूने मंदिर का दीप।
चुनर में पिया प्रेम की भात,
दिखे आँखें मोती सा सीप।।

मानकर आँचल नील अकाश,
दमकते तारे निशा अपार।
बदन सोहे पूनम की रात,
नैन प्रीती की है बौछार।।

नेह से भरी तुम्हारी बात,
कर रही सपनों को साकार।
आत्म श्रद्धा का मेरी दीप,
उजाला करे सकल संसार।।

Scanned by CamScanner

मल्लिका छंद

सत्य पंथ

सत्य पंथ नेक भाव।
फूल-सा वहाँ सुझाव।
कर्म सूर्य-सा उजास।
धर्म पुष्प-सा सुवास।।

रीति-नीति भाव दीप।
नैन नेह ज्योति सीप।
नाभि नाद ब्रह्म ज्ञान।
दीन प्रीत भक्ति जान।।

राग द्वेष नर्क जान।
प्रेम भाव स्वर्ग मान।
हो नहीं स्वभाव हीन।
मानवीय भाव लीन।।

धर्म-कर्म हो अपार।
प्रेम-राग की बहार।
हार-जीत खेल जान।
हौसला उमंग शान।।

विधाता छंद (शृंगार रस)

प्रेम पाती

लिखी है प्रेम पाती पियु,
सुनो तुम साँस मेरी हो।
खिली है प्यार की पहली,
कली की आस मेरी हो।

नहीं लगता कहीं पर मन,
पुकारे दिल तुझे सजना।
कहो दिल मानता कैसे,
नहीं मेरा सुने कहना।।

बसायी नैन में मूरत,
युगों तक प्यार की मैंने।
जलायी ज्योति इस हिय में,
हमारे प्यार की मैंने।

किया शृंगार जो मैंने,
सताए याद दिन-रैना।
लिखा जाता नहीं वो सब,
बहे जो रात-दिन नैना।

Scanned by CamScanner

शंकर छंद

अनमोल जीवन

वाणी में नित मिश्री घोलो, और मधु मुस्कान।
शांति मिले हर इक श्रोता को, मानो अमृत पान।
ऐसा हो व्यवहार हमारा, बहता रहे स्नेह।
कर्म-धर्म से न दिल दुखाएँ, मिलता रहे नेह।।

ये जीवन अनमोल जान लो, मिले न बारम्बार।
त्याग करो द्वेष-ईर्ष्या का, पाल उर में प्यार।
सम्मान से ही सबमें बढ़े, समभाव की प्रीत।
प्रेम भाव अरु मानवता से, मिले जीवन जीत।।

जलती रहें इन्सानियत की, दीप-माला द्वार।
जीवन तमस को दूर करके, बाँट दे हम प्यार।
उर हो त्याग-करुणा-दया की, भावना से युक्त।
पर वेदना-संवेदना के, भाव हो संयुक्त।।

हो ध्यान प्रभु का नित्य मन में, मोह से हो दूर।
मंगल वहाँ आशीष बरसे, सुख मिले भरपूर।।
निस्वार्थ मन से त्याग हो तब, हो सही कल्याण।
मुसकान होंठों लिए पुलकित, दीन जन के प्राण।।

छप्पय छंद

जीवन का सार

धन का कर न गुमान, साथ कुछ भी कब जाता।
जब ढल जाता गात, अहं कब टिकने पाता।
कितना करो प्रयास, नहीं धन खोया आता।
समय महाबलवान, सरक रजकण-सा जाता।
भर लो जीवन प्रेम से, सबको बाँटें प्यार हम।
त्याग भाव है श्रेष्ठ धन, रोज करें उपकार हम।।

हो न कभी अभिमान, कृपा बरसे प्रभु तेरी।
द्वेष-भाव हो दूर, कामना ऐसी मेरी।
ऊँच-नीच हो दूर, फैलता रहे उजाला।
जले आत्म का दीप, मिले पग-पग जय माला।
मानवता का धर्म हो, प्रभु का वहाँ निवास है।
जनहित की हो कामना, इतनी सी प्रभु आस है।।

जैसा मन का भाव, जगत वैसा ही दिखता।
जैसा हो व्यवहार, प्यार वैसा ही मिलता।
वीर निष्ठ कर्त्तव्य, मान जीवन में पाता।
दुष्ट स्वार्थी भाव, भटक रस्ता वह जाता।
भाव कलुष सब मेट के, नैना बरसे मेह से।
पर उपकारी भाव रख, मिलिए सबसे नेह से।

Scanned by CamScanner

चौपाई छंद

सीता

जनक नंदिनी देवी सीता,
धरती पुत्री सबकी मीता।
सुन्दरता की है वैदेही,
मन-मंदिर वह राम सनेही।।

माया मोह लगे सब झूठे,
त्याग-समर्पण भाव अनूठे।
ममता-करुणा की सागर हैं,
प्रेम-वात्सल्य की गागर हैं।।

सागर-सी गहराई मन में,
धैर्य धरा-सा रख जीवन में।
है मर्यादा पुरुषोत्तम की,
साथी है जो जनम जनम की।

लव-कुश की थी जो महतारी।
प्रेम पुजारिन ममता प्यारी।
सुहासिनी दुख की हरनारी,
जनक दुलारी सुख भरनारी।।

माता की वह स्नेह दुलारी,
जनक राज की प्राणों प्यारी।
जिनको धनुष पिनाक खिलौना,
मुदित तोड़ के राम सलोना।।

सुमेरु छंद

1222 122, 2122

मैत्री

सखा अनमोल हो तुम, शान मेरी,
तुम्हीं धड़कन तुम्हीं हो, जान मेरी।
मधुर मुस्कान तेरी, फूल-सी है,
बिना तुम जिंदगी मम, शूल-सी है।।

अमर मैत्री रहेगी, प्राण-प्यारी,
सुदामा-कृष्ण-सी है, जान न्यारी।
नहीं है स्वार्थ देखो, त्याग सारा,
लुटाते प्रेम खुशियाँ, राग न्यारा।।

रहे हर हाल में तुम, साथ मेरे,
कभी प्यारे न छूटे, हाथ तेरे।
बने हो तुम हमेशा, ढाल मेरी,
करो कोशिश बचाने की घनेरी।

अमी-रस धार उर बहती रहे जब।
खिले अपनत्व की बगिया वहाँ तब।
लगे संसार मधु-वन-सा निराला।
दिखे मैत्री सुधा रस का पियाला।।

Scanned by CamScanner

पीयूष छंद

मांडवी का त्याग

मांडवी का वह निराला प्रेम था।
मूर्ति संयम की अनूठा नेम था।
आर्य मर्यादा बढ़ाती कामिनी।
वह भरत का मान रखती मानिनी।

उर विरह अरु होंठ पर मुस्कान थी।
नैन में अनुराग पियु की शान थी।
प्रेम उसका त्याग वह अनमोल था।
प्रेम का बलिदान अरु मधु बोल था।।

मांडवी का यह अनोखा चाव था।
जिंदगी में स्नेह का मृदु भाव था।
कर्म उसका दीप-सा आलोक था।
सोच मंगल धर्म में भूलोक था।।

वो समर्पण-त्याग अरु बलिदान का।
प्रेम-उर वात्सल्य के अभिधान का।
भोर-सी शुभ लालिमा दमके जहाँ।
फूल-सी खुश्बू सदा महके वहाँ।।

Scanned by CamScanner